शब्द–शक्ति: अर्थ, भेद, स्वरूप एवं महत्त्व

श्री नरेश कुमार 'वत्स'
संस्कृत अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय बिधराना जिला जींद हरियाणा
मोबाइल– 09896923078
ई–मेल– nareshsharma077@gmail.com

शोध सारांश–

शब्द और अर्थ एक दूसरे के पूरक भी हैं और एक दूसरे पर आश्रित भी । उनकी स्थिति वही है जो जल और तरंग की होती है । गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है ''गिरा अरथ जल–बीचि सम काहियत भिन्न न भिन्न ।" दोनों का मूल स्रोत वाक् तत्त्व है। अर्थ के साथ शब्द का संबंध ही शब्द को अर्थवान बनता है अर्थात शक्ति का संचार करने वाला अर्थ ही होता है जो वक्त, प्रसंग, श्रोता और प्रयोग के अनुसार अर्थ को निश्चित करता है । अर्थ पर ही शब्द शक्ति निर्भर करती है । किसी शब्द के अंतर में निहित अर्थ को व्यक्त करने वाले व्यापार शब्द शक्ति कहलाते हैं । शब्द शक्ति ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वाक्य के अंतर्गत किसी शब्द का अर्थ ग्रहण किया जाता है ।

बीज शब्द– शब्द शक्ति, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, वाच्यार्थ, लक्षणार्थ, व्यंग्यार्थ

शब्द शक्ति अर्थ एवं स्वरूप:–

शब्द शक्ति को समझने से पूर्व हम शब्द से संबंधित तीन स्थितियों पर विचार करते हैं । प्रथम स्थिति में यदि हम खेत में घास घर रही किसी गाय नामक पशु को देखकर कहें 'गाय चर रही है' तो हमारे मस्तिष्क में एक अवधारणा बनेगी कि ऐसा कोई पशु चर रहा है जिसके चार थन, दो सींग, दो कान और लंबी पूँछ है । वह एक पालतू पशु है जो दूध देता है ।

दूसरी स्थिति में यदि हम अपने घर में आई नवविवाहिता के गुणों से प्रभावित होकर कहें 'हमारे घर में जो बहू आई है वह बिल्कुल गाय है' तो दिमाग में एक ऐसी अवधारणा बनेगी कि जो नवविवाहित आई है वह है तो औरत परंतु है बहुत ही शरीफ और शील स्वभाव की । तीसरी स्थिति में यदि किसी बस में ज्यादा भीड़ है और एक बहुत ही कमजोर व्यक्ति बस में चढ़े उसे देखकर कंडक्टर बोले कि 'पहलवान! थोड़ा आगे सरको' तो वहाँ 'पहलवान' का शाब्दिक अर्थ कुछ भी हो परंतु इसका अर्थ वक्ता (कंडक्टर) और श्रोता (कृषकाय व्यक्ति) के लिए समझने के लिए लगभग समान होगा क्योंकि संभवत कंडक्टर ने दूसरे व्यक्ति को व्यंग्य में ऐसा कहा हो और श्रोता ने उसे व्यंग्य समझकर कहा हो और श्रोता ने उसकी प्रत्युत्तर दिया हो । अतः स्पष्ट है कि जिस प्रकार प्रथम दोनों स्थितियों में 'गाय' और तीसरी स्थिति में 'पहलवान' शब्द का अर्थ शाब्दिक अर्थ से भिन्न है । इनमें इन शब्दों का अन्य अर्थ है जो इस शब्द में छुपा है परंतु समय और संदर्भ के अनुसार बदल जाता है । शब्दों में छुपे इस अर्थ को शब्द–शक्ति के नाम से जाना जाता है । सामान्य अर्थ में हम कह सकते हैं कि शब्दों में जो अर्थ निहित होता है उसके अर्थ को प्रकट करने वाला व्यापार ही शब्द–शक्ति कहलाता है । जैसा हमने ऊपर की तीनों स्थितियों में देखा । शब्द का अर्थ तो निश्चित होता है परंतु भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में, संदर्भ में उसका अर्थ भिन्न हो जाता है यह भिन्न अर्थ निकालने का कार्य जिस शक्ति के द्वारा संपादित होता है उसे शब्द शक्ति के नाम से जाना जाता है ।

शब्द शक्ति के भेद–

शब्द शक्ति के कितने भेद होते हैं? इससे पूर्व हमें यह जान लेना जरूरी है कि शब्द कितने प्रकार के होते हैं । शब्द मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं वाचक, लक्षक और व्यंजक । इसी के आधार पर इसके अर्थ भी तीन प्रकार के हो जाते हैं वे हैं– रूढ़, यौगिक और योगरूढ़ । जो वाच्यार्थ को प्रकट करते हैं उनको अभिधेयार्थ भी कहते हैं । इसी अभिधेयार्थ के आधार पर पहली शब्द शक्ति अभिधा होती है । किसी भी शब्द के वाच्यार्थ को छोड़कर जब लक्ष्य अर्थ प्रकट होता है वहाँ लक्ष्यार्थ को संपादित करने वाली शक्ति लक्षणा कहलाती है और इसी प्रकार अन्य अर्थ को प्रकट करने वाली शक्ति व्यंजना शब्द शक्ति के नाम से जानी जाती हैं । अतः शब्द शक्ति मुख्यतः तीन प्रकार की होती है अभिधा, लक्षणा और व्यंजना ।

अभिधा शब्द शक्ति द्वारा विवर्तित अर्थ –

अभिधा वह पहली शब्द शक्ति होती है जो मुख्य अर्थ का बोध कराती है । एक शब्द का वाच्यार्थ निश्चित नहीं होता । एक ही शब्द के बहुत सारे वाच्यार्थ हो सकते हैं । विशेष संदर्भ में किसी शब्द का क्या अर्थ लगेगा इसका निर्णय प्रसंग, अर्थ प्रकारण, सामर्थ्य, देश, काल, संयोग या वियोग किसी भी आधार पर हो सकता है । ऐसे में अलग आधार पर शब्दार्थ की कल्पना विशिष्ट हो सकती है । यह कल्पना संकेत और कल्पित अर्थ को संकेतित करती है । इसी संकेतितार्थ को वाच्यार्थ या अभिधार्थ कहते हैं । प्रसिद्ध आचार्य विश्वनाथ ने अपनी पुस्तक 'साहित्यदर्पण' में लिखा है की सांकेतिक अर्थ के बोध के व्यापार को अभिधा कहते हैं । 'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनाद इमाभिधा' अर्थात भाषा की वह शब्द शक्ति जिसमें शब्द के सामान्य प्रचलित अर्थ का बोध होता है, अभिधा कहलाती है । यहाँ यह स्पष्ट किया जाता है कि शब्द शक्ति में शब्द का प्रसंगत अर्थ व्यापित होता है ।

लक्षणा शब्द–शक्ति के विवर्तित अर्थ–

किसी भी शब्द का अर्थ वाच्यार्थ तक सीमित नहीं रहता । जहाँ मुख्य अर्थ में बाधा उत्पन्न हो जाए तो दूसरा अर्थ या तो रूढ़ी के आधार पर या प्रयोजन के आधार पर लगा दिया जाता है । वहाँ वह अर्थ लक्ष्यार्थ कहलाता है । शालीनता, संकोच, मर्यादा, आदि को कम से कम शब्दों में व्यक्त करने की इच्छा वक्ता की होती है यही इच्छा लक्षणा शब्द शक्ति का कारण बनती है । दूसरी स्थिति में आए उदाहरण को देखिए । 'हमारे घर में जो बहू आई है बिल्कुल गाय है' यहाँ शब्द का मुख्य अर्थ लक्षण के आधार पर लिया गया है । क्योंकि यहाँ एक तो मुख्य अर्थ में बाधा उत्पन्न हुई है, दूसरे मुख्य अर्थ और लक्ष्य अर्थ में परस्पर संबंध है और तीसरे इसका अर्थ किसी विशेष प्रयोजन के कारण अन्य अर्थ लगाया जा रहा है । यही अन्य अर्थ देने वाला कार्य व्यापार लक्षणा शब्द शक्ति के नाम से जाना जाता है । इसी प्रकार यदि हम रामायण में आए एक प्रसंग के आधार पर कहें 'अहिल्या पत्थर बन गई ।' में जब अहिल्या के चरित्र पर दोष लगा तो वह पत्थर के समान निष्प्राण सी हो गई थी । किसी महिला का पत्थर बन जाना लक्षणार्थ है । लक्षणा शब्द शक्ति आचार्यों के मध्य व्यापक चर्चा का विषय रही है ।

व्यंजना शब्द शक्ति के विवर्तित अर्थ–

तीसरी शब्द–शक्ति का नाम व्यंजना है । अभिधा और लक्षणा के असमर्थ हो जाने पर शब्द का सर्वथा नया अर्थ व्यंजित हो, तब प्रकट हुआ नया अर्थ ही व्यंजना कहलाता है । दूसरे शब्दों में जब वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ अपना अर्थ का बोध करवा कर विरत हो जाए और जिस शब्द शक्ति से किसी तीसरे नए अर्थ का बोध हो उसे हम व्यंजना शब्द शक्ति के नाम से जानते हैं और उससे निकलने वाले अर्थ को हम व्यंग्यार्थ कहते हैं । व्यंग्यार्थ वास्तव में श्रोता या पाठक पर ही निर्भर करता है । वह उसके अर्थ का केवल संकेत देता है और अपनी कल्पना शक्ति के आधार पर श्रोता या पाठक बाकी अर्थ को ग्रहण करता है । वस्तुत व्यंजना, अभिधा और लक्षणा से परे किसी अन्य अर्थ की प्रतीति करवाती है । विश्वनाथ ने अपने 'साहित्य दर्पण' में व्यंजना को परिभाषित करते हुए सूचित किया है कि इसका संबंध शब्द और अर्थ दोनों से है ।

विस्तारस्वभिधासु यथार्थों बोध्यते पर: ।

सा वृत्तिव्यंजना नाम शब्दस्यार्थादिकस्यच ।

व्यंग्य तो केवल सहृदय ही समझ सकता है जबकि अभिधेयार्थ और लक्ष्यार्थ को कोई भी सहज रूप से ग्रहण कर लेता है। यदि किसी सतही कवि को कहा जाए कि आप तो 'महाकवि' हैं तो इस कथन की व्यंजना सर्वथा विपरीत अर्थ को इंगित करती है कि आप नहीं है । अतः यहाँ व्यंजना है इसी प्रकार जैसे प्रथम उदाहरण में बताया गया था कि यदि किसी कमजोर व्यक्ति को देखकर हम कहें 'पहलवान' थोड़ा आगे सरको तो इस 'पहलवान' शब्द का सर्वथा विपरीतार्थ होगा । इसमें वक्ता भी व्यंग्य रूप में उसे पहलवान की कहने की हिमाकत कर रहा है और श्रोता अर्थात वह कृषकाय व्यक्ति भी उसे व्यंग्य समझकर शायद कहने वाले को कह दे कि आपका कहने का अर्थ क्या है? मैं आपको पहलवान दिखाई देता हूँ?

अतः यहाँ व्यंजना शब्द शक्ति होगी लेकिन यह कोई जरूरी नहीं कि हम किसी व्यक्ति को व्यंग्य करके ही कहें । सामान्य रूप से यह शब्द–शक्ति सूचनार्थ भी होती है । किसी व्यक्ति के खेत में नहरी पानी देने का समय पाँच से छह तक है तो वह पहले व्यक्ति को यह कह कर याद दिलाये कि पाँच बज गए । अब कहने को तो यह सामान्य अर्थ है केवल सूचित कर रहा है कि पाँच बज गए हैं परंतु इस वाक्य में के अंदर छुपी हुई शब्द–शक्ति यही है कि वह उसे आगे कह रहा है कि उसके पानी का समय हो गया है । यहाँ कोई व्यंग्य नहीं है परंतु व्यंजना शब्द शक्ति जरूर है ।

उपसंहार –

तीनों शब्द शक्तियाँ अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के माध्यम से शब्द के अर्थ का पता चलता है । काव्य में इन सब शक्तियों का महत्त्व निर्विवाद है । जहाँ काव्य में व्यंग्यार्थ प्रमुख है वहीं संस्कृत के कई आचार्यों ने अभिधा को ही प्रमुखता प्रदान की है । उनका मानना है कि समस्त शब्द शक्ति व्यापार अभिधा पर ही आधारित है । हिंदी के आचार्य देव ने अभिधा को प्रमुख मानते हुए स्वीकार करते हैं–

"अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा लीन ।

अधम व्यंजना रस कुटिल, उल्टी कहत प्रवीन ।"

शब्द शक्तियों को श्रेणीबद्ध करना समीचीन प्रतीत नहीं होता लेकिन भाषा में सभी शब्द शक्तियों का अपना विशिष्ट महत्त्व है । तीनों शब्द शक्तियाँ ही अर्थ चमत्कार हेतु बनती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गणपति चंद्र गुप्त, साहित्यिक निबंध, लोक भारती प्रकाशन
2. गोविंद पांडे एवं सरस्वती पांडे, हिंदी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, अभिव्यक्ति प्रकाशन
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, अनिल प्रकाशन
4. विजय पाल सिंह, पाश्चात्य काव्यशात्र, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. प्रतियोगिता दर्पण अतिरिक्तांक,हिंदी भाषा
6. रचना (अप्रकाशित शोध प्रबंध), 'अटल बिहारी वाजपेयी के काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण', दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास
7. रचना (अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध), 'रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण', दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास